प्रातः क्लास 21-6-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। मीठे रूहानी सिकीलधे बच्चे यह तो जानते हैं कि हम अपने देवी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। इसमें राजाएं भी हैं तो प्रजा भी हैं। पुरुषार्थ तो सभी करते हैं। जो जास्ती पुरुषार्थ करते हैं वह जास्ती प्राईज़ पाते हैं। यह तो एक कामन कायदा है। यह कोई नई बात नहीं। इसको देवी बगीचा कहो, देवताओं का बगीचा कहो या राजधानी कहो। अभी यह है कलियुगी बगीचा। अथवा कांटों का जंगल। उसमें भी कोई बहुत फल देने वाले झाड़ होते हैं कोई कम फल देने वाले होते हैं। कोई अपुसी आम होते हैं, कोई आम होते हैं कोई सन्तरे होते। फूलों की फलों की ऐसी ही भिन्नप्रकार के झाड़ होते हैं। वैसे ही तुम बच्चा में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार हैं। कोई बहुत अच्छा फल देते हैं, कोई हल्का फल देते हैं। भिन्न2 झाड़ होते हैं ना। यह भी फल देने वाला बगीचा है। इस देवी झाड़ की स्थापना हो रहीहै। अथवा फूलों की बगीचा की स्थापना हो रही है। कल्प पहले मिशल। आते2 मीठे खूशबूरंदार भी बन रहे हैं नम्बरवार पुरुषार्थअनुसार। सभीवैराईटी है ना। बाप के पास भी आते हैं बाप का मुखड़ा देखने। यह तो जरूर समझते हो बाबा हमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। बेहद का मालिक बनने में खुशी भी होती है ना। हद के मालिकपने में है दुःख। यह भी बच्चे समझते हैं यहखुल ही सुख और दुःख का बना हुआ है। और यह भी भारतवासियों के लिए है। विलायत वालों के लिए तो ख्याल भीनहीं किया जाता। पहले अपना घर तो सम्भालो। घर पर धणीकी नज़र रहती है ना। तो बाप भी बैठकर एक एक बच्चे को देखते हैं। इन में कौन2 से गुण हैं। और कौन सी अवगुण हैं। बच्चे खुद भी जानते हैं। बच्चों को बाबा कहे कि सभी अपनी2 खामियां आपे ही लिखकर आओ तो झट लिख सकते हैं। हम अपने में क्या2 खामी समझते हैं। कोई न कोई खामी है जरूर। सम्पूर्ण तो कोई भी बने नहीं हैं। हां बनने जरूर हैं। कल्प2 बनें हैं। इसमें कोई संशय नहीं। परन्तु इस समय क्या2 खामी है वह बतलाने से बाबा इस पर भी समझावेंगे। इस समय तो बहुत खामियां हैं। मुख्य सभी खामियां होती है देहअभिमान के कारण। वह फिर बहुत हैरान करते हैं। अवस्था को आगे बढ़ने नहीं देते हैं। इसलिए पुरी रीत पुरुषार्थ करना है। यह शरीर भी तो छोड़कर जाना है, दैवी गुण भीयहां ही धारण कर के जाना है। कर्मातीत अवस्था में जाने का अर्थ भी बाबा समझा रहे हैं। कर्मातीत होकर जाना है तो कोई भी विघ्न न रहे। क्योंकि तुम हीरे बनते हो ना। हमारे में क्या2 कमी है यह तो हरेक जानते हैं। क्योंकि तुम तो चैतन्य हो ना। जड़ हीरों में खामी होगा तो वह निकाल नहीं सकेंगे। तुम तो चैतन्य हो। तुम उस खामी को निकाल सकते हो। तुम कौड़ी से हीरे बनते हो। तुम अपन को अच्छी रीत जानते हो। सर्जन पूछते हैं कौन सी खामी है जो तुमको अटक डालते हैं। आगे बढ़ने नहीं देते हैं। खामी रहित तो पिछाड़ी में बनना है ना। वह सभी अभी निकालना है। अगर खामी नहीं निकालते तो फिर हीरो की किमत हो जातीहै। यह भी बड़ा पक्का जवाहरी है ना। सारी आयु हीरे ही इन आंखों से देखे हैं। ऐसा जवाहरी कोई होगा नहीं जिसको इतना हीरों का परखने का शौक हो। तुम भी हीरे बन रहे हो। जानते हो कोई न कोई खामी है जरूर। सम्पूर्ण बने नहीं हैं। चैतन्य होने कारण पुरुषार्थ से तुम खामी निकाल सकते हो। हीरे जैसा तो बनना है जरूर। सो तब बनेंगे जब पूरा पुरुषार्थ करेंगे। बाप कहते हैं तुम्हारी अवस्थाऐसी पक्की होनी चाहिए जो शरीर छूटने समय अन्त में कोई भी याद न आये। यह तो क्लीयर है। मित्र-सम्बन्धी आद सभी से रग तोड़ना है। सम्बन्ध रखना ही है एक बाप से। अभी तुम हीरे बन रहे हो। यहजवाहरात का दुकान है। तुम एक एक जवाहरी हो। यह बातें दूसरा कोई भी जानते नहीं। साधु सन्यासी आद कुछ नहीं जानते। वह थोड़े ही ऐसे कहेंगे कि बाबा बैठा है वह समझ हैं। कोई कह न सके। हम सभी का बाप है। वह तो कुछ भी नहीं जानते। तुम बच्चे जानते हो हरेक की दिल में है हम विश्व के मालिक बन रहे हैं। पुरुषार्थ अनुसार बनते हैं। जिन्हों को ऊंच पद मिला है उन्हों ने जरूर पुरुषार्थ किया है। हैं तो तुम्हारे में से ही ना। तुम बच्चों को ही इतना पुरुषार्थ करना है। कल्प पहले

मिशल पुरुषार्थ करेंगे जरूर। इसलिए बाबा एक एक बच्चे को देखते रहते हैं। जैसे फूलों को देखा जाता है ना यह कैसा खुशबूदार फूल है, यह कैसा है, इनमें बाकी क्या खिट2 है। क्योंकि तुम चैतन्य हो ना। चैतन्य हीरे जान सकते हैं हमारे में क्या2 खामियां हैं। जो बाप से बुधि योग तोड़कर कहां न कहां भटकते हैं। बाप तो कहते हैं बच्चे मामकें यादकरो। दूसरा कोई भी याद न आये। गृहस्थ व्यवहार में रहते एक बाप को ही याद करना है। इन्हों की तो भट्ठी बननी थी जो तैय्यार होनिकले हो सर्विस करने लिए। देखते हैं पुरानी2 जो हैं वह अच्छी रीत सर्विस कर रहे हैं। थोड़े नये भी एड होते जाते हैं। पुरानों की भट्ठी बनी थी। भल पुराने हैं उन में भी तो खामियां है जरूर। हरेक अपने दिल में समझते हैं कि बाबा जो अवस्था बनाने के लिए कहते हैं वह अजन बनी नहीं है। एमआबजेक्ट तो बाप समझाते हैं सभी से जास्ती खाद है = देहअभिमान। तब ही देह के तरफ बुधि चली जाती है। देह में होते हुये देहीअभिमानी बनना है। इन आंखों से देखने की चीज़ कोई भी सामने नहीं आये। ऐसी अपनी अवस्था जमानी है। हमारी बुधि में सिवाय बाप के और शान्तिधाम के और कोई भी वस्तुपिछाड़ी में याद न आये। कुछ भी साथ नहीं ले जाना है। जैसे पवित्र होकर आये वैसे ही पवित्र होकर जाना है। पहले2 हम नये सम्बन्ध में आये। अभी है पुराना सम्बन्ध। पुराने सम्बन्धी जरा भी याद न आये। गायन भी है ना अन्त काल .... यह अभी की बात है। गीत तो कलियुगी मनुष्यों ने बनाई है। परन्तु वह समझते थोड़े ही हैं। मूल बात बाबा समझाते हैं एक बाप के सिवाय और कोई भी याद न आये। एक बाप की ही याद से तुम्हारे पाप कट जावेंगे। और पवित्र हो जावेंगे। पवित्र हीरे बन जावेंगे। कोई 2 पत्थर बहुत किमती होती है। माणिक की भी किमत होती है ना। बाप अपने से भी बच्चों की वैल्यु ऊंच करते रहते हैं। अपनी जांच करनी होती है। बाप कहते रहते हैं अन्तर्मुख हो अपने को देखते रहो। हममें क्या2 खामी है। कहां तक देहअभिमान है। अभी सम्पूर्ण बनने में तो टाईम पड़ा हुआ है। पुरुषार्थ के लिए बाबा भिन्न युक्तियां समझाते रहते हैं। जितना हो सके एक बाप की ही याद रहे। भल कितने भी प्यारी हो या प्यारियां हो। बहुत सुन्दर बच्चे बहुत लवली होते हैं, स्त्री पुरुष का आपस में बहुत लव हो तो भी कोई की याद न आये। यहां का कोई भी चीज़ याद न आये। कोई2 का बच्चों में भी बहुत मोह होता है। बाप कहते हैं उन सभी से हट हटाकर एक की याद रखो। एक लवली बाप से ही प्यार रखना है। उन से ही सभी कुछ मिल जाता है। योग से ही तुम लवली बनते हो। लवली आत्मा बनती है। बाप लवली प्युर है ना। आत्मा आत्मा को पवित्र बनाने लिए, लवली बनाने लिए कहते हैं बच्चे जितना मुझे याद करेंगे तुम अथाह लवली बनेंगे। तुम इतना लवली बनते हो जो तुम देवी देवताओं की पूजा अभी तक हो रही है। बहुत लवली बने हो ना। आधा कल्प तुम राज्य करते हो। आधा कल्प फिर तुम ही पूजे जाते हो। तुम खुद ही पुजारी बन अपने चित्रों को पूजते हो। इतने तुम लवली बनते हो। तुम ही सब से लवली बनने वाले। तुम अपनी जांच करो। लवली बाप को अच्छी रीत याद करेंगे तो लवली होंगे। सिवाय एक बाप के और कोई याद न आये। बाप को बहुत2 लव से याद करना है। बाप की याद में बैठे2 प्रेम की आंसू आ जाये। तूफान तो बहुत आते हैं ना। अपने ऊपर बहुत जांच रखनी है। हमारा लव बाप के सिवाय और कोई तरफ तो नहीं जाता है। भल कितनी भी अच्छी प्यारी चीज़ हो तो भी एक बाप जितना प्यार कोई से नहीं। तुम सभी एक माशुकके आशुक बनते हो। आशुक माशुक जो होते हैं एक वारी एक दो को देख लिया, बस शादी आद कुछ नहीं। रहते भी अलग हैं। परन्तु एक दो की याद में बुधि में रहती है। अभी तुम बच्चे जानते हो हम सभी आशुक हैं एक माशुक के। उस मायुक को तुम ने भक्ति मार्ग में भी बहुत याद किया है। यहां तो बहुत याद करना है। जब कि वह सम्मुख पढ़ाते हैं। बाप कहते हैं मामेकं याद करो तो तुम्हारा बेरा पार है। इनमें संशय की कोई बात नहीं। भगवान से मिलने लिए सभी भक्ति करते हैं। यहभक्ति फिर भी होनी ही है। यह तुम समझते हो नम्बरवार।

सर्विस भी नम्बरवार ही करते हैं। कोई कोई तो बहुत हड्डी सर्विस करते हैं। सर्विस के लिए ही जैसे कि एकदम तरफते हैं। बहुत मेहनत करते हैं। यह भी तुम जानते हो बड़े2 आदमी इतना नहीं उठेंगे। वह कम दर्जा पावेंगे। तुम्हारा मेहनत कोई व्यर्थ नहीं जावेंगा। कोई समझ कर लायक होते हैं फिर बाबा के आगे आते हैं। तुम समझ सकते हो यह लायक है वा नहीं। समझो तुमको कहते हैं हम सुबह के क्लास में आना चाहते हैं। बाबा की मुरली सुनूं। तुम ना नहीं कह सकते हो। बिठना ही पड़े। आठ दस दिन समझा दिया और आकर बैठे तो हर्जा नहीं। तुम फार्म तो भराते ही हो। जिससे पता मालूम पड़ जाता है। बाबा दिल में समझते तो है ना। दृष्टि तो उन्हीं को तुम बच्चे से मिलती ही है। श्रृंगार करने वाले तुम बच्चे हो। जो भी यहां आये हैं उन सभी को तुम बच्चों ने ही श्रृंगार कराया है ना। बाबा ने तुमको कराया तुम फिर औरों को श्रृंगार कराकर ले आये हो। बाबा आफरीन देते हैं। जैसे2 श्रृंगार किया है ऐसा ही औरों को भी कराते हैं। बल्कि अपनेसे भी अच्छा औरों को कराते हैं। सभी कीअपनी2 तकदीर है ना। कोई2 समझने वालेसमझाने वाले से भी तीखे हो जाते हैं। समझते हैं अन से तो हम अच्छा समझा सकते हैं। दिल में आता है, हम बहुत अच्छा रसीला समझा सकते हैं। समझाने का नशा चढ़ता है। फिर तो वह निकल पड़ते हैं। बापदादा दोनों के ही दिल पर चढ़ पड़ते हैं। बहुत नये2 हैं जो पुराने से भी तीखे हैं। कांटों से अच्छा फूलबन पड़े हैं। इसलिए बाबा एक एक को बैठ कर देखते हैं। बागवान है ना। दिल होती है उठकर जाकर पिछाड़ी में देखूं। क्योंकि पिछाड़ी में भी जाकर बैठते हैं। अच्छे2 महारथियों को तो फ्रन्ट में बैठना चाहिए। नहीं तो फिर ढूढ़ते हैं। यह फूल कहां है। बच्चे भी समझते हैं बाबा को खुशबूएंदार फूल चाहिए। इसमें तो किसको धक्का आने की तो बात ही नहीं। अगर धक्का आवेगा, रुठेगा तो अपने तकदीर से ही रुठते हैं। सामने फूलों को देख अथाह खुशी होती है। यह भी बहुत अच्छा सर्विस एबुलहै। इसमें थोड़ी डिफेक्ट है। यह बहुत अच्छा साफ है। इनमें अन्दर सारी जाली जमी पड़ी है तो वह सारा किचड़ा निकालना है। बाप जैसा लवलीस्ट बनना है। अभी कोई बना नहीं है। स्त्री का भी पति में लव रहता है ना। पति का इतना नहीं होता है जितना स्त्री का पति में होता है। वह तो दूसरी तीसरी स्त्री कर लेते हैं। स्त्री का तो एक पति गया। बस। या हुसेन करती रहती हैं। पुरुषों के लिए तो एक जुती गई तो दूसरी तीसरी जूती ले लेंगे। शरीर को जुती कहा जाता है ना। शिव बाबा का भी यह लांग बूट है। आत्मा का यह (शरीर) है जूती। अभी तुम बच्चे समझते हो हम बाबा को यादकरेंगे तो फर्स्ट क्लास बनेंगे। कोई फशनएबुल होते हैं तोजुतियां भी 4-5 रखते हैं। नहीं तो आत्मा की जुती एक है, पावं की भीजुती एक होनीचाहिए। परन्तु यह एक फशन पड़ गया है। अभी तुम समझते हो बाप से हम क्या वरसा पाते हैं। गाते तो हैं ना, क्रिश्चन भी कहते हैं 3000 वर्ष पैराडाईज था। अभी फिर हम उस पैराडाईज के मालिक बन रहे हैं। हैवन कहा ही जाता हैवन्डर ऑफ वर्ल्ड। जरूर हैवनली गाडफादर ही हैवन स्थापन करेंगे। अभी तुम प्रैक्टीकल में श्रीमत पर अपने लिए स्वर्ग की स्थापना कर रहे हो। यहां तो कितने महल आदि बनाते रहते हैं। यह तो सभी खत्म हो जावेंगे। तुम वहां क्या करेंगे। दिल में आना चाहिए यहां तो हमारे पास कुछ भी नहीं है। वैसे ही भल सह बाहर मेंघर गृहस्थ में रहते हैं यह भी समझते हैं सभी कुछ बाबा का है। हमारे पास तो कुछ नहीं है। हम ट्रस्टी है। ट्रस्टी कुछ रखते नहीं हैं। बाबा ही मालिक है। यह सभी कुछ बाबा का है। घर में रहते भी ऐसे समझो। शाहुकारों की बुधि में तो यह बातें आ न सके। बाबा कहते हैं ट्रस्टी हो रहो। लिखते हैं बाबा मकान बनाऊं। पूछते हैं, बाबा कहेंगे भल बनाओ। ट्रस्टी हो करो। बाप तो जीता बैठा है ना। बाप जावेंगे तो सभी इकट्ठे चले जावेंगे अपने घर। फिर तुम चले जावेंगे अपनी राजधानी में। मैं तो वहां ही रह जाऊंगा। हमको कल्प आना ही है पावन बनाने। अपने समय पर आता हूं। भक्ति मार्ग में तो तुम इतने बड़े2 मंदिर बनाते हो तो वहां तुम्हारे कितना अथाह धन होगा। तुमको सुख की मार्जिन जरूरी है। दुःख

बहुत थोड़ा है। तुम बच्चों को तो बड़ी खुशी होनी चाहिए अभी यह दुःख के दिन पूरे हुये। अभी हम ब्राहमण बने हैं। फिर देवता बनेंगे। यह है ब्राहमणों का कुल। जब तक ब्राहमण न बने तब तक देवता बन न सके। कितना भी कोई माथा मारे तो बन न सकेंगे। ब्राहमण जरूर बनना पड़े। कोई कोई अपने मत पर दुकान निकाल बैठते हैं शिव बाबा पास जरा कुछ होता ही नहीं। अलग दुकान तो निकल न सके। यह तो शिव बाबा की अविनाशी बैंक है। वह सभी गवर्मेन्ट की बैंकें तो पाई-पैसे की हैं। यह तो बड़ी भारी अविनाशी बैंक है। जो फिर तुम 21 जन्म उस बैंक से खाते हो। बड़ी अजबरदस्त अविनाशी बैंक है। शिव बाबा की। ब्रहमा की नहीं है। ब्रहमा की होती तो ब्राहमणों की भी होती। यह शिव बाबा की है। पैसा डालो तो कास्ट का खज़ाना मिल जाता। परन्तु कई बच्चों को इतना नशा नहीं रहता है। इसलिए बाप को याद कर नहीं सकते हैं। कितनी खुशी रहनी चाहिए ओ हो बाबा। हम आधा कल्प स्वर्ग में रहेंगे। हीरे जवाहरों के महल होंगे। जड़ित के चित्र होते हैं उनकी कितनी वैल्यु होती है। वहां तो दीवालों आद में भी यह हीरे जवाहर लगे रहते हैं। तुम कहेंगे इतने हीरे जवाहर आद कहां से आवेंगे। अरे तुम देवता बनेंगे तो तुमको सभी कुछ मिलेगा ना। तब वहां यह कपड़ पहनेंगे क्या। खानियां जो इस समय खाली हो गई है वह सभी भरतु हो जावेंगे। वहा तो ढेर के ढेर हीरे जवाहर आद होते हैं। जैसे यहां ईंटें पत्थर हैं, वहा रीयल होंगे तो विचार करो हम यह शरीर छोड़ कर हम प्रिन्स जाकर बनेंगे। विश्व के मालिक बनेंगे। खुशी होनी चाहिए ना। बाप ने बेहद का वरसा दिया है। जितना हम बाबा को बहुत याद करेंगे उतना वहां भी पहले2 आवेंगे। फर्स्ट क्लास एयर कन्डीशन .... भी होते हैं ना। पैसे जास्ती हैं तो एयर कन्डीशन में भी बैठेंगे। यहां तो देखो मम्मा ने एक पाई भी जमा नहीं की। सिर्फ ज्ञान और योग था। कितना ऊंच पद पाती है। गरीबों को तो प्रीत है।

तो बाप समझाते हैं अपने को अच्छी रीत देखना है हमारे में कोई खामी तो नहीं है। कोई तरफ बुधि तो नहीं जाती है। अगर बाप को याद करते रहेंगे तो फिर सभी खामियां निकल जावेंगी। ऐसे मत समझो कल्प पहले भी ऐसे हुआ था। नहीं। झट उनको निकालना चाहिए। भल कोई भी लवली चमरी हो। चमरी पर फिदा न होना है। यह चमरी चुहरी है। छी छी है ना। इस पर क्या फिदा होना है। फिदा होना होता है आत्मा जो पवित्र होती है। शरीर पर नहीं। तुम सभी हरिजन हो। चमरी हरिजन है ना। इनको छोड़ना है ना। देह सहित देह के सभी सम्बन्ध यह है हरिजन। बाकी हरि अर्थात दुःख हरने वाले साथ बुधि का योग लगाओ। अगर किसके देह साथ बुधि योग है तो चुहरी साथ है। बाप कहते हैं देह के सभी धर्मों को छोड़ अपने को आत्मा समझो। आत्मा पवित्र हो रही है। शरीर तो अपवित्र है ना। यह पुरानी खाल है। इनको क्या याद करना है। आत्मा पवित्र बन कर और पतित चहुरी(शरीर) को याद करे यह कहां की बात। यह शरीर पुराना है। भूत से बना हुआ है। अभी बाप कहते हैं देही अभिमानी भव। आत्मा-अभिमानी भव। देह के छी2 सम्बन्ध सभी छोड़ो। तुम्हारी नम्बरवार कर्मातीत अवस्था हो जावेगी। फिर यह भ्रष्टाचारी शरीर खलास हो जावेगी। फिर फर्स्ट क्लास शरीर मिलेंगे। अगर भ्रष्टाचारी शरीर से दिल होगी तो श्रेष्ठाचारी शरीर मिल न सके। बाप कहते हैं मुझे याद करो और कोई की भी याद न रहे। यह शरीर सभी चुहरी है। जिनकी आत्मा पवित्र नहीं वह तो चुहरी ही है। इसमें मेहनत करनी है। खुश नहीं होना है हमने बहुत अच्छा समझाया। बहुत प्रभावित हुआ। बाबा कहते हैं घर भी प्रभावित नहीं हुआ। सिर्फ तुम्हारी ही महिमा की। खुद को तो महिमा लायक नहीं बनाया ना। खुद समझे तब है बात। भल आवेंगे हाथ जोड़ेंगे वह भी देह को देख जोड़ते हैं। बाप को थोड़े ही जानते हैं। इसलिए बाबा मिलते हैं तो भी अशरीरी हो बेहद में रहते हैं। दुनिया भूल जाती है। आत्मा को बैठ दृष्टि देते हैं। तो वह एकदम चुप हो जावेंगे। बात निकलेगी नहीं। अच्छा मीठे2 रूहानी सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।